(11.7) ✓

Date 26/2/01

आयुष्मान प्रवीण

(1)

शुभ स्मरण,

आप कुछ प्रश्न रखे है, प्रश्न सहित उसका उत्तर नीचे लिखा है।

प्रश्न 1- "जो जिससे बना है वह उससे अधिक नहीं होता"। फिर जब हम कहते है कि चैतन्य जड़ से बना है तो चैतन्य में "चैतन्यता" कहाँ से आई? वह तो जड़ की Properties से अधिक लगती है?

उत्तर : चैतन्य, जड़ से बना नहीं है बल्कि जड़ से विकसित हुआ है। जड़ से बना हुआ का तात्पर्य है - अणुबन्धन व भारबन्धन सहित रचित रचनाएँ- जो प्राकृतिक रूप से मिलती है, उस पर मानव द्वारा बनाया गया कृतियाँ।

प्रश्न 2 : क्या चैतन्य जड़ से ~~बना~~ बना या दोनो हमेशा ही थे? यदि गठनशील परमाणु ही गठनपूर्ण हुआ तो मध्यांश के अंश कहाँ गये? बाबा कहते है जीवन परमाणु के मध्य मे एक ही अंश होता है - यह कैसे हुआ? क्यों हुआ?

"परमाणु के विकास मे एक ऐसी अवधि - - - - - उसगठन मे से के लिए तृप्ति है"

— अवधि का क्या तात्पर्य है?

— से के लिए तृप्ति का क्या तात्पर्य है?

(2)

Date ________

उत्तर:- जड़ व चैतन्य दोनो हमेशा से हैं। हमेशा रहेंगे।

जड़ और चैतन्य का अध्ययन करने से तृप्त परमाणु (गठनतृप्त) ~~परमाणु~~ के रूप में चैतन्य का बोध होता है। यह बोध जड़ व चैतन्य का साथ-साथ होता है। जड़ परमाणु में जब भी परिवेशों में अंश अधिक हो जाते हैं तब परिवेश से 'मध्य' में जाते हैं। जब कभी परिवेश में कम होते हैं तब 'मध्य' से परिवेश में चले जाते हैं। यह नित्य लीला है। इसी क्रम में तृप्त परमाणु में परिवेशों की तृप्ति, मध्य में तृप्ति के संतुलन में चैतन्य इकाई को देखा गया।

'अवधि' का अर्थ घटना घटित होने की क्रिया से है। 'क्रिया' निरंतर है जबकि 'घटना' बदलती रहती है- जड़ संसार में। (यहाँ अवधि का अर्थ काल नहीं है)

- गठन में, से, के लिए तृप्ति का अर्थ है- अंशों की संख्या व विन्यास निश्चित होने से है। इसी के साथ चैतन्य क्रिया की निरंतरता हो जाती है।

प्रश्न 3 "सत्ता स्थितिपूर्ण है, प्रकृति स्थितिशील है" इनका क्या मतलब है

उत्तर:- ~~प्रकृति (सत्ता में)~~ को सत्ता में प्रकृति को पूर्णता के अर्थ में होने के अर्थ में पाया गया है। जैसे:- इकाई - धन उसका वातावरण = इकाई सम्पूर्ण। चाहे जड़ या चैतन्य इकाई हो। इसे ऐसा समझ सकते हैं- धरती अपने वातावरण (तरल, विरल, ठोस) सहित सम्पूर्ण है। चैतन्य इकाई का वातावरण समझ के

आधार पर गण्य है इससे क्रम और जागृति के आधार पर मूल्यांकन करना संभव हो गया। इसे इसीलिए जागृति क्रम, जागृति कहा गया। इसके ~~पहले जागृति क्रम, जागृति कहा गया~~ विकास क्रम, विकास कहा गया। "सत्ता स्थितिपूर्ण है" यह व्यापक के अर्थ में कहा गया है।

टीप :- अस्तित्व की मूल इकाई परमाणु है इसी में ह्रास व विकास सिद्ध होता है। How?

~~प्रश्न~~ '4' अस्तित्व में प्रकृति की मूल इकाई परमाणु है इसके पूर्व रूप अर्थात 'परमाणु अंश' व्यवस्था एवं निश्चित आचरण को व्यक्त नहीं कर पाते हैं। जहाँ रहते है वहीं की क्रिया करते हैं।

प्रश्न 5 श्रम + गति = परिणाम
परिणाम + गति = श्रम
श्रम + परिणाम = गति
} इसका क्या मतलब है।

यह गणितीय विधि से लिख दिया है। पर मुझे लगता है कि इससे कुछ स्पष्ट नहीं होता है कि क्या कहना चाह रहे हैं? पहला समीकरण फिर भी ठीक लगता है, बाकी दोनों का क्या मतलब है?

(4)

Date ____________

उत्तर:- मूलतः श्रम, गति, परिणाम अपने-2 तृप्ति बिन्दु पर्यन्त कार्यरत रहते ही हैं। ये तीनों बारंबार प्रवर्तित होते ही रहते हैं जैसे श्रम के बाद पुनः श्रम, गति के बाद पुनः गति और परिणाम के बाद पुनः परिणाम। इन तीनों के तृप्ति बिंदु में जागृति का पहचान होता है।

जैसे श्रम + गति = परिणाम + श्रम = गति + परिणाम = श्रम
इसी प्रकार बारंबार दुहराता है।

प्रश्न:6 इकाई व ऊर्जा सम्पन्नता का वियोग नहीं होता। ... उत्तर में अनुपर्यन्त विकास के लिए प्रवर्तित है... इसे Explain कीजिए

उत्तर- पहले इस बात को समझा चुके हैं कि इकाई, संरचना के स्वरूप में जड़/चैतन्य इकाई प्रकाशित हो चुके हैं। जैसे मैं और मेरे जैसे समझे हुए लोग जागृत हैं। बाकी सभी मानव जागृत होने के इच्छुक हैं।

प्रत्येक इकाई अपने संरचना के साथ त्व सहित व्यवस्था ही है।

ऐसे प्रश्नों को पूछकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। जीवन के विधा में यह प्रवृत्ति अत्यंत सार्थक स्रोत है। मेरा आशीर्वाद है आपका मति जल्दी-2 जागृति में लगे के लिए तत्पर रहे।

Date

मैं 5/4/08 को उत्कल एक्सप्रेस से चलकर 6/4 को दिल्ली (निजामुद्दीन) पहुँचूंगा।

जैसा आप लोग निर्णय किए हैं वैसा चलेंगे।

शेष शुभ

आपका

नागराज